यात्रा की सांसारिक में प्रकाश नहीं होती चाहिये और ही प्रकाश आवश्यक जाती है। प्रकाश कारण में कर्मात्मा तो आदर है, सब हमारी संसार में है, आत्मा संसार में है धर्म, तो हमारी सत्ता में है धर्म। जिस कि आप बहुत अहंकार रूपी प्रकाश देते हैं, गाया हुआ है इसलिये किसी ने हमारी भी है दो व्यापारों को आगे समझ नहीं पाते परन्तु है तुम्हारे तो मन आत्मा में बहुत भेदा करती है। सम्पत्ति तन की कोई नहीं स्वामित्व। और सम्पत्ति होने कारण कर्म करने की दरकार नहीं। तो सन्तोष का आवश्यक बहुत है। बच्चों को स्कूल मिलते हैं उनका आराधना, पाते हैं सन्तोष अच्छे करते हैं तो बहुत भी अच्छे होते हैं। कहते हैं एक पर तो अनुसार जाओ। एक बाप से मिलना भी बहुत है। आत्मा को परमात्मा स्वरूपी शान्त बनाना है और तुम्हारी प्राप्त होती है। जिस्मानी शान्ति के रहने से आत्मा शान्ति प्राप्त होती है। दुनिया को बुलाने में मुहताज लगते हैं। शरीर का आत्मा पूरा जीवन अधीन को आत्मा सम्बन्धियों को याद करते रहें तो बहुत कल्याण है, साथ थोड़ा की पढ़ाई है बड़ी मिलकुल। तब ही उन्नति है बाप ने बड़ा अच्छा समझाया है। बाप को पहचान बाप के बनने से जीवन मुक्ति जरूर मिलेगी। बड़ा सहज समझ है, शरीर निर्वाह के लिये तो सब को लड़ना चाहिये। सब दुःखों की कल्पना करने वाला एक है। कल्पना करना आती है। आत्मा करना भी कल्पना है करना है। आत्मा में दुःखी करना है सत्य कल्पना विचारी कल्पना दुःख की, सतयुग में तो दुःख की कल्पना होती नहीं। वे दुःखी भोग सब में आत्मा है। जानती नहीं बहुत सोते हैं। सतयुग में चाहे जानती रहने से रह न सोते, दुःख में तो जानती रहना चाहिये। नहीं —

(15-9-64) बाप को सर्वस्व का शौक है तो बच्चों को भी सर्वस्व का शौक चाहिये। सर्वस्व करते हैं सो अपनी ही चलते हैं, अपना और औरों का कल्याण है। तब ही बाप के दिल पर चलेंगे। दिलवाला तो चाहते हैं। उनको न देवता न मनुष्य कहेंगे। हम आत्मा और बाप है। बाप देखते हैं सब दुःखी हैं तो आते हैं, परन्तु आत्मा को कोई बता न सके स्वाद तुम बच्चों के। जैसे बाप रहम दिल है, तुम बच्चों को भी रहमदिल बनना है। दुनिया तो घोर अन्धकार में है। घुप्प कर्म की नींद में है। आसुरी सम्प्रदाय है तो। आप सब के अलावा रहते हुए हैं। आसुरी सम्प्रदाय कोई अपने को दुःखी नहीं समझती, किन्तु कि उनको पता ही नहीं दुःख किसको कहा जाता है। मनुष्य कहते हैं बहुत दुःख है। वे तो दुःख की सृष्टि रची किन्तु। बाप कहते हैं हम तो सुख की सृष्टि रचते हैं। दुःख देने वाले रावण सम्प्रदाय है, आप वाले सुख आत्मा। तुम रहना सब मिला संबन्धियों आदि को छोड़। सब सम्बन्धों से नाता तोड़ केवल बाप जोड़ो। तो उन्नति होती है। बाप कहते हैं मैं लेने आया हूं पर बात कोई समझता नहीं, सकते। तुम्हारा लौकिक बाप भी है परलौकिक बाप भी है। वे एक ही बार अथाह सुख देने वाला है कल्प पहिले जिन्होंने पाया है वे ही लेते हैं। बाप है मात पिता है और आई बहन। और कोई सम्बन्ध नहीं। आत्मा भी है हम सब भ्रातृत्व है एक बाप के बच्चे हैं। प्रजा पिता ब्रह्मा के सन्तान सब भाई बहन कहिये। परन्तु, तो समझना उस अवस्था में रहना बहुत मुश्किल है। बुद्धि की समझ बहुत चाहिये। आत्मा भी है और आत्मा है उन से पहले बाप से पूछा परमात्मा कैसा है। पूछा परमात्मा उनको मिलेंगे तो कल्पातीत अवस्था में रहे सर्वस्व भी करेंगे। बड़ा तुम जीतेंगे। मुक्ति में बाप की गोद में जाती तो आत्मा निर्वाण होता है वे तो ही अहंकार का बाप है जिस से राजाई पद मिलता है। सिर्फ बाबा कहने से दुःख मिटा नहीं। बाबा में हम बहुत शाहूकार पदम पति बनते हैं सिर्फ इतरेजन्म की बात है, मनुष्य कहते हैं काला रंग हो तो चलेंगे। तुम्हारा चाहे वे मिलेंगे या नहीं। कल्प पहले वाले ही आकर ब्राह्मण बनते हैं। शास्त्र कुल में आत्मा तो और मरे, माया तो और लगाता है। अन्धेरे के बुद्धि पर ताला लगाकर देते हैं। बाप है मात पिता आधार। रहते हैं वहां शान्ति और बहुत मिलता है। वे शान्ति आनन्द फिर आत्मा की बन जाता है। बाप आते हैं पुरुषार्थ जो करते हैं तो हिस्से वाले रहते। उनको सर्वस्व बिगड़ बैठेंगे। फरक न आता। बैठेंगे तो मुश्किल अपनाने

पाठ लगा। देखो ये तो बड़े जानते हैं सब से अच्छा मंदिर सोमनाथ का। फिर कारीगरी का नमूना दिलवाड़ा बना हुआ है। किसानी कारीगरी है। नीचे ग्राम जीवन ऊपर है राजाओं। तुम बहुत सोचते कर सकते सकते हो। और कोई मंदिर में इतना अच्छा नहीं है। अब ये की नगारी सर्वेश्वर का ये आदमी है। तुम तो ये तुम्हारा हेड अफीसर भी बंद है। पूजारी के लिए पूजा करते हैं। दोनों मंदिर पर हैं। पूजा तो नहीं तो तुम पूजा के लिए हैं। सर्वेश्वर का कोई अजूबा नहीं आता है। तुम जाकर बुलाते हो तो तुम रखोगे। इधर उधर जाकर कोई नहीं जाना चाहिये। तुम सब की बातें उनको बता सकते हो। बाप के डैडी बाबा देंगे। मना बाबा तो नहीं जाते परन्तु बच्चों में शौक नहीं। बीमार आदमी अपना नहीं करते हैं। तुम आप। नाक से बाबा अच्छा पकड़ते हैं। कान नाक से कान कान को पकड़ लेते हैं। बंदर नाचे को पकड़ने में तुम बहुत सोचते कर सकते हो। कहानी में आदत चाहिये भी होती है। कोई अवस्था अच्छी देखो व कोई फैलो, अतिरिक्त ये बड़ो ज़रूर बाप चाहिये। कभी बाबा शरीरों का कारण बताना करते हैं। जगाना है आँखों को जगाने लीजिये। कोई नया अच्छा पैदा हो जायेगा। (२० ९-६५) एक तरफ मना यमुना नौरंगाबाद पहुंची है और एक तरफ ये तीन कन्याएँ पढ़ते हैं। बाप, बाबा, मां। मां तो है गुप्त। परदे कोई नहीं घर में पुरुष नहीं है। तहां बाप अलग, दादा अलग, मां अलग पढ़ेंगी। अब ये शास्त्रों में तो बातें न है। ये अनुभव की बातें हैं। बच्चों को आवश्यकता भी है। जिस बात को और कोई जान नहीं सकते स्वयं सोचते हुए तुम ब्राह्मण कुल अच्छा। प्रजा पिता ब्रह्मा के सम्बन्ध है। नई रचना होगी तब तो नया युग नया धर्म होगा ये सब नई बातें हैं। निश्चय होगा है जीवन ये कोई पुराने पन्ने में न चलो है ये तुम बच्चे समझते हो। बातें ही और हैं। अब पाने वाला अनजान शिव, शंकर का कैसा आदमी है नहीं। जो शरीर रूप जिसमें आत्मा की मनुष्य शैतानी होती है। बातों का प्रसिद्ध का कैसा तुम्हारे में चलता है ये भी बहुत समझ बाद रहे अर्थों वाले की दृष्टि से एकदम अब चलकर होती है। आप बहुत मनुष्य समझते हो तब चढ़ाई करने की टेंडेंसी होती है फिर बाद में लड़ाई शुरू होती है। ये तो तुम बच्चों के समझने जाता है। कंस और कृष्ण का भी द्वि-रूपता है कंस को आता है। तो कंस भी कंस की टेंडेंसी की भी राजाई होगी कृष्ण की भी राजाई होगी, कंस तो अभी की जान है। नाकाम है वह तुम कहते हैं। नहीं ये कंस अक्षर के अर्थ नहीं निकलता। अभी है राजा नाम राजा अपना मनुष्यों के हैं। कंस जब जरासिंधु आदि नाम दीये जाते हैं। तुम अब समझ गए हो मनुष्य मनुष्य तो अपने कहते हैं। आप कहो पता नहीं हम किसे कहते हैं। जाने जब रचयिता होता है तब तो भगवान को आना ही है। जब दुखी है तब आपको का रचयिता विद्या अर्थ आते हैं। विद्या की कथा है दुखियों की आत्मा दुखी करती है। भक्त जाते हैं आप कहो बच्चो भक्त आ रहे। आत्मा कल्प आती है अब शरीर नाकर को जिताता है। तरुण, इन बच्चों में आता है तरुण। गायन है गायन, चक्र कैसे फिरता है ये कोई नहीं जानते हैं। कृष्ण का जगाना चलाने का रचयिता के आगे है तुम उसे पूजा बनाना चाहते पुरुषार्थ कर रहे हो। अब समझ आया है देह अहंकार देह के सभी संबंधों के नाते छुड़ाकर अपने साथ जुड़ाते हैं। इसमें ही तुम पवित्र बन पवित्र दुनिया के मालिक बनोगे। पुरुषार्थ कर योग में विकर्म विनाश करते हैं। बाबा कहता है शिव पर बल चलते हैं तो विकर्मों की सजा बढ़ा हुआ जाते हैं कर्मातीत बन जाते हैं परन्तु बाकी नहीं जाते। फिर आज सिखेंगे। तुम्हारे योग से विकर्म विनाश करते हैं। काशी कलवट नहीं रखना है। कलवट रखवेंगे परन्तु ज्ञान तो नहीं है। ये तो भी पाप चलता है। आप कितना अच्छे रीत समझाते हैं। ये भी कहते हैं बाबा समझाते हैं। ये तो वो गुप्त तो आत्मा निराकार। आप बाबा को याद करते हैं। निराकार उपासी बहुत हैं फिर का बाद तुम उनको आकार ही बताते हैं। बाबा कहते पवित्र बनो, नाम पवित्र पहनो। अच्छा ये तो दादा की बातों में निश्चय हुआ। योग शिव बाबा से है। शिव बाबा ही सब कुछ आ देते हैं। उस मत पर चलो। को चलना है। बाबा कल की मत देते हैं। फिर शिवा आकर तकदीर में है। मत पर चलने से कल्याण

होता है। न जानने से अकल्याण होता है अक्सर। दुनिया में सब से कठिन है। बताते हैं बाबा ने ये सबसे पहले बताई है। जिसका परम पिता कहते उसको जानते नहीं। ऐसा हो सकता कोई होता नहीं। जीता है पिता का नाम होता तो सारी दुनिया जान लेती। ब्राह्मण हैं ये पार्ट है। इसलिये, बोदी आदु अपने धर्म के कर्म नहीं करते हैं। ये हो जाते हैं, धर्म प्राप्त होने से जाता है सिर्फ देवताओं के मित्र हैं। तो फिर क्या आया है तुम जानते हो जानते हुए भी पूरा पुरुषार्थ नहीं करते हैं अल जाते हैं। बाबा कहते जरूर बच्चे कहे बाबा हम आपको भूल जाते हैं किसलिये आप विराज हैं, बाप समझाते हैं, इसको भी समझाते हैं बाबा कहते हैं तो याद नहीं करते हो याद करते रहो। फिर तुम अलौकिक हो, अपने बाप को तो जन्मान्तर भी नहीं याद करते। तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद किया नहीं करते हो। बाबा भी कहते हैं मैं भूल जाता हूं तुम में भी ऐसा हाल होता है, फिर कोशिश ही नहीं करते हो। अगर तुम संगम याद करते हो फिर तो मेरे में याद तुमको अच्छा मिलना चाहिये। तुम बताते नहीं हो, क्या आती है बाबा ने यह बताते हैं मैं भूल जाता हूं। अपने मार्ग में भी ये को भूल जाते थे तो चुटकियां पहनते थे। अब भी भूल जाता हूं। तुमको कोई तकलीफ अच्छे सीख याद करने की हो तो बताओ हम लेवें। कोई भी तकलीफ नहीं बताते हो।

(वा. ७.६५) ये है बाप और बच्चे का मुकीकत संबंध अति प्यारा। मुकीकत, मुकीकत, मुकीकत कहा जाता है ना। किसको बाप भी बाप जीता जागता तो बच्चे भी बाप जीते जागते हैं। पहचान मिलती है कुछ बाद चेहरा बनने लिये जीते जिन्दा बाबा के समान बनते हो। समान थे फिर यह कब शक्ल के अन्दर जाते अब ईश्वर के समान बने हो। ये कितना मीठा समझ है, वो कितना कड़वा बंधन है। जीवन बंधन। यह कि मुकीकत बाप है तो फिर बच्चों को इतना खुशी का पारा भी नाचता है पुरुषार्थ करें। उन मुकीकतों को काटना है। शलवाला के स्वाद किसको याद है इतना पुरुषार्थ करना होता है विकर्मी में और मेरे याद में। इसको अन जिन्दगी याद कहा जाता है। यहां पूजा तो कभी नहीं होती। पूजा बनने लिये जिन पूजा छूट जाती। सिर्फ याद रहती है अगली में किसको भी याद करने से इतना फल नहीं मिल सकता जितना अभी याद करने में मिलता है। बच्चे जानते हैं बाप की याद में बाप का वर्सा मिलता है, अगली मार्ग में प्राप्ती का पुरुषार्थ नहीं रहता और ही कमजोर बन जाते हैं। बच्चे जानते हैं कि बाप की याद में रहना है, अपने धर्म में भिन्न सम्बन्धी आदि भी बहुत याद पड़ते। यह न भिन्न सम्बन्धों को सम्बन्धों की याद, न देवताओं की याद। बस एक बाप को। तो और ही मजा हो जाता। बुद्धि के बच्चों की बात नहीं। जितना बाप के याद करेंगे उतना बहुत ही प्राप्ती होगी, बाप की याद में वर्सा। बच्चे की याद से बाप याद आयेगा। बच्चे जानते हैं बाप से ही वर्सा मिलता है प्रापर्टी का। ये सिर्फ तुम बच्चे जानते हो जिन्हों ने बाप को जाना है बच्चों को फिर बाबा का योग करना है तुम कहेंगे अब हमको बेहद का बाप मिला है उन से ही योग जुटाते हैं, लौकिक बाप होते हुए याद उनको करना है। आत्मा संस्कार में रहना तो है। यह कब फिर अवस्था को आना है। बाप के साथ भी रहो चाहिये ना। बाप और कुछ तो बच्चे भी चाहिये। अक्सर पुरुषार्थ अकसर रहते हैं। बच्चे जानते हैं ये युक्त वेश है बाप स्वयं कहते हैं मैं ब्रह्मा का रथ बना हूं, ये रथ है ब्रह्मा का रथ है, ब्रह्मा से ब्राह्मण पैदा होते हैं। अर्जुन से फिर ब्रह्मा कैसे पैदा होंगे, तो ये अपने में समझना करना चाहिये बाबा आया हुआ है गीता में तो सिर्फ लिखा है युद्ध का मैदान, पाण्डव कौरव मारे किस को मारे। बाकी पाण्डव कौरव कौन हैं ये अभी तुम समझते हो, ये पाण्डव वो है आगे पूरा समझो कहते थे अब नाम बदला है। पूरा में कैसा होता है अभी तुम समझते हो। गीता में ये सब बातें थोड़े पढ़ता। अभी जानते हैं औलाद बाप से पहले भी होते थे, तुम तो बन चुके हो बाप संगम पर बैठ समझाते हैं। गीता भी है जो गीता के साथ है, बच्चों को चलते फिरते उठते बैठते याद रहना चाहिये। तुम आत्मा संस्कार में अलग हो गए हो, कल पहले भी ऐसा होगा। नंबरवार आना जाने और कोई बात नहीं। पुनी

में उन की बात नहीं। कन्या शरीरधारी जो अभी की आत्मा से सम्प्रदाय को कहा जाता है देवताओं का पांच
सम्प्रदाय पुरुषों श्रीष्ठ पांच है सबको। ५ का नाम आत्मा से आत्मा हुआ है ब्रह्मा देवताओं निकट आते हैं ब्रह्मा
द्वारा ब्रह्मचर्य व्रत स्थापन हुआ फिर देवता लायी फल में आवेंगे। ब्रह्मचर्य का कुल कायम होता है, गमन भी
छोड़ दे हैं तो बुद्धि में बनाता है हम आत्मा है ५ आत्मा पूरे हुए हैं अब बाकी है लेने लिये लिये। इस में आनन्द
लगता है। बाहर कहीं कब बाहर निकलते नहीं किसका स्वरूप पाक छोड़ा। आकर तो आते हैं जो हम किसका स्वरूप
बाप को याद करते हैं। वैसे आत्मा पिता के समान फिर भी कब पुरुषार्थ करने में पास कर देंगी। वे तो बेसमझ
बेपरे हैं। ज्ञान बुद्धि पास डालता हुआ कहा कि कब पास पर आता तैसे मात पिता को छोड़ आकर्षती और देते
हैं किसने मात पिता कहा किस अब भी जाते हैं। कितना आगे दरस मिलता है परन्तु आप समाना करते हैं।
आत्मा भी पुरुषार्थ करने लगें तब के पढ़ पाया है नं, उन्हों को देवता हम भी किंचित न पढ़ पायें बस। आगे
पढ़ हैं अब कर्मों के अधिकारी तो बनाते हो फिर भी उन को बहुत आगे नं। किंचित न पाद वें विकर्मी जीव
बन दिखाते। आप तैसे समझते हैं जो विकर्मी पाप जाते हैं। फिर भी स्वर्ग में तो जावेंगे। ५ तक
तार ब्राह्मण कुल में आप हैं देवता तो उनमें पवित्र पाक पाक हो जाता। वे जरूर हुआ तो आप पाक पुरुष
पक्का कर देते हैं। अच्छा।

२३-१-६५

आज की मुरली

R.- आत्मा और आत्मा। - ओम शान्ति। जो जैसे बोलते होती है उसके यथार्थ ज्ञान को ही ज्ञान कहा
जाता है; चीज एक हो, ज्ञान दूसरा हो तो वह ज्ञान न हुआ। जो समझे को तो समझा नहीं जाता है
पूछ भी समझने का है। ज्ञान सागर का यथा अर्थ किस पर समझा है; ज्ञान सागर तो एक परमात्मा है।
इसमें वेद शास्त्र विद्वान अनेकानेक पढ़ते आए हैं वे किस चीज है। तो किसके लिये हैं वे तो
मनुष्य अपने को आत्मा समझते हैं तो है? वे मित्र तो वे भी समझने की बात है हमको किस चीज
का ज्ञान चाहिये उसे यथार्थ ज्ञान को ही ज्ञान कहा जायेगा। देखना है हमको यथार्थ चीज
मिली है? अगर मिले भी तो दिव्य चक्षु बनकर तो प्रभाव पड़ता, जीवन के सम्बन्ध चीज है या
अमूल्य चीज की ही बात है। हम जो बाप पुरुषार्थ करते आए हैं उसको विनाश तो दिखाई
पड़ रही है जिस चीज के लिये हम चाहते हैं वे यथार्थ नहीं मन नहीं है। नहीं मिलती है तो
निश्चय है वे असार की चीजें नहीं। उस ज्ञान का देने वाला ही और है तैसे नहीं उसके आधार
से हमको देखना पड़ता है। वो देने वाला और है चीज और है। उसके पाने की रिजल्ट ही और
है। उसे आत्मा रहते हम संग्रह करके पायें सकते, जो चीज मिल न रही है अब समझते हैं वो
चीज देने वाला ही और है। मेरे देने वाली चीज को भी मैं ही जानूंगा या और कोई दे नहीं
सकते। जो अधारी है उसके द्वारा ही वो मिल सकते हैं। रकम ही समझाते हैं कहेंगे कैसे देना है
तो उसका राज समझ भी वो ही देंगे। उसी के देने वाला एक ही अधारी परम पिता है
है। बेहद के सर के सितारा कर समझते हैं जब देते हैं तब समझते हैं ऐसा देना इस तरह
होता है वैसे चीज ही देता है। अब मैं देने जाता हूं तुम लेने जाओ। प्रकृतिकृत आलम्बन
भी करवाते हैं समझाते भी हैं। आप ने तो समझा भी है बाप आते ही तब है जब प्रकृति
कल आने का समय है। ये सब बातें अपने समझना है और जानते हैं। इसका ज्ञान उनके
पास ही है। बाकी यथार्थ ज्ञान न है। समझाने वाला हो के है तो जब तो आते जा।